गाँधी स्मारक त्रिवेणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय

बरदह, आज़मगढ़

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि बबलू कुमार भट्ट शोध छात्र (कला संकाय) गाँधी स्मारक त्रिवेणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बरदह, आजमगढ़ ने प्रस्तुत शोध प्रबंध "कहानी का उत्तर आधुनिक समय" विश्वविद्यालय के नियमानुसार मेरे निर्देशन में पूर्ण किया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध बबलू कुमार भट्ट द्वारा किये गये सर्वेक्षण पर आधारित है और सर्वथा मौलिक है।

आचार्य
गाँधी स्मार त्रिवेणी स्नातकोत्तर
महाविद्यालय बरदह, आजमगढ़ (उ.प्र.)

निर्देशक

डॉ० (हृदय नारायण राय शास्त्री)
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गाँधी स्मारक त्रिवेणी स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बरदह, आजमगढ़

विषय-सूची

पृष्ठांक

भूमिका 1-10

प्रथम अध्याय: हिन्दी कहानी का इतिहास 11-87

क) रासोकाल

ख) सूफी दौर

ग) ब्रिटिश समय

घ) प्रेमचंद का समय

ङ) प्रेमचंद के बाद

च) स्वतंत्रता के बाद

छ) नई कहानी

ज) साठोत्तरी कहानियाँ

झ) समानान्तर कहानियाँ

ञ) अकहानी

ट) समकालीन कहानियाँ

द्वितीय अध्याय : उत्तर आधुनिक चिन्तन 88-157

क) संरचनावाद के बहाने

ख) विखंडनवाद की संस्कृति

ग) अनुपस्थिति की तलाश

घ) उत्तर आधुनिकतावाद

तृतीय अध्याय : उत्तर आधुनिक संस्कृति 158-218

क) समाज का विश्लेषण

ख) उपभोक्तावाद

ग) भूमण्डलीकरण

घ) सूचना का बढ़ता दबाव

ङ) विज्ञापन की दुनिया

पृष्ठांक

चतुर्थ अध्याय : कहानी पर उत्तर आधुनिक प्रभाव 219-244

क) रूप में बदलाव

ख) संवाद या संलाप

ग) संस्मरण का बाना

घ) टूटते चौखटे

ङ) विकेन्द्रीकरण

च) पाठकीय सरोकार

छ) सूचनाकारी प्रवृत्ति

पंचम अध्याय: उत्तर आधुनिक कहानीकार 245-268

क) काशीनाथ सिंह

ख) मनोहर श्याम जोशी

ग) उदय प्रकाश

घ) मैत्रेयी पुष्पा

ङ) जया जादवानी

निष्कर्ष 269-277

संदर्भ ग्रन्थ-सूची 278-284

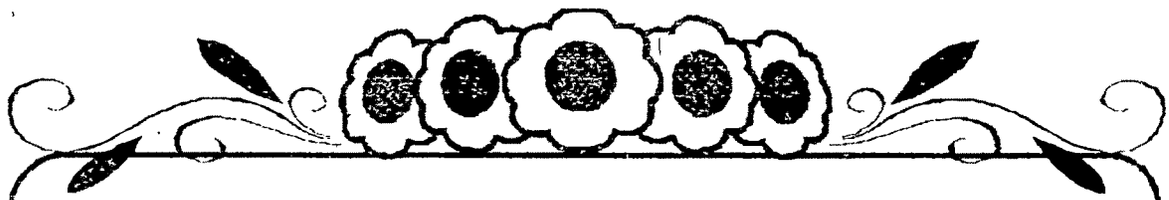

शोध का विषय : "कहानी का उत्तर आधुनिक समय"

भूमिका

शोध का विषय : "कहानी का उत्तर आधुनिक समय"

भूमिका

'कहानी' शब्द का प्रयोग जिस साहित्य रूप के लिए रूढ़ हो गया है, वह आधुनिक साहित्य का अत्यन्त लोकप्रिय, सशक्त एवं जीवन्त साहित्य रूप है। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों और समीक्षकों ने इसके आरम्भ और विकास को लेकर विचित्र कल्पनाएँ की हैं और इसकी वर्तमान शक्ति को देखते हुए इसे अत्यन्त प्राचीन घोषित करने की चेष्टा की है। लगता है प्राचीन परम्परा के अभाव में कहानी का मूल्यांकन ही सम्भव नहीं। वैसे 'कहानी' का इतिहास उतना पुराना है जितना कि मनुष्य का सामाजिक जीवन[1]। हृदय के भावों को व्यक्त करने के लिए समय–समय पर जितने साहित्य रूपों का उदय हुआ उन सभी में कहानी किसी न किसी रूप में विद्यमान थी, चाहे वे महाकाव्य या प्रबन्ध–काव्य रहे हों अथवा नाटक। पर इन साहित्य रूपों के क्रमिक विकास के साथ कहानी के इतिहास को कभी नहीं जोड़ा जा सकता। सभी प्रकार की कहानियों को कहानी की संज्ञा नहीं दी जा सकती, अन्यथा लोक जीवन में बैठकों और अलावों के निकट बैठकर चाव से कही और सुनी जाने वाली कहानियों को भी विवेचन के लिए सामने रखना पड़ेगा।

कथा कथन और श्रवण मनुष्य का सहज स्वभाव है। कहानी कहने और सुनने की प्रथा उतनी ही पुरानी है जितनी मानव सभ्यता तथा सम्भावना की शक्ति। रविन्द्र नाथ ठाकुर का कहना है, "नदी जैसे जल स्त्रोत की धारा है, मनुष्य वैसे ही कहानी का प्रवाह" कहानी की उपयोगिता तो असंदिग्ध है।[2] आधुनिक कहानी उन्नीसवीं शताब्दी में विकसित और पुष्ट हुआ साहित्यिक रूप है किन्तु इसके पूर्व भी कहानी के तत्व अन्य कथा–रूपों में विद्यमान थे। कथा, आख्यायिका, गाथा, आख्यान, वृतान्त आदि आधुनिक कहानी के प्राचीन पर्याय हैं। जिन्हें कहानी तो नहीं कहा जा सकता किन्तु उनमें कहानी के तत्व और लक्षण विद्यमान थे और आधुनिक कहानी के विश्लेषणों को समझने के लिए इन पूर्वगामियों के स्वरूप का उल्लेख करना आवश्यक है। अमरकोश में कल्पना तत्व को

1. हिन्दी साहित्य एक परिचय . डॉ० त्रिभुवन सिंह
2. कथा सरित्सागर, अनुवादक, केदारनाथ शर्मा की भूमिका : डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल पृ० 26

प्रधानता वाली विधा को 'कथा' कहा गया है। 'काव्यादर्श', 'साहित्य दर्पण' और 'ध्वन्यालोक' में भी इससे मिलता जुलता मत व्यक्त किया गया है, 'अमरकोश' के अनुसार ज्ञात और सत्य आख्यान वाली रचना को 'आख्यायिका' कहते हैं। 'साहित्य दर्पण' और ध्वन्यालोक में इसकी कुछ विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। गाथा, आख्यान और वृतान्त भी शास्त्रकारों द्वारा लगभग समानार्थ बोधक साहित्य माने गये हैं।

भारत का प्राचीन कथा–साहित्य वैदिक संस्कृत, संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश आदि भाषा युगों में कथा की कला अपनी अलग – अलग विशेषताओं के साथ प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकी है। फलतः आलोचकों ने प्राचीन कथा साहित्य का आरम्भ वैदिक संस्कृत अर्थात् ऋग्वेद से जोड़ा है। 'लेकिन ऋग्वेद में हमें कथाएँ नहीं मिलती, वरन् कथाओं के बीज मिलते हैं। इन कथा बीजों में मूल रूप से यज्ञ – धूम्र की सुगन्धि और मंत्रों का सुन्दर संगीत मिलता है इनमें कहीं भी कथा का रूप नहीं मिलता जिन्हें हम ब्राह्मण एवं उपनिषदों में पाते हैं'[1]। ऋग्वेद विभिन्न दैवीय शक्तियों की आराधना, पूजा, प्रशंसा में कहे गए असंख्य मंत्रों का भंडार है। इन मंत्रों के बीच–बीच में कुछ ऐसे सूक्त अवश्य मिल जाते हैं, जिनमें दो या तीन के परस्पर कथोपकथन जुड़े होते हैं। ऐसे सूक्तों को संवाद कहते हैं। भारतीय साहित्य के अनेक अंगों और रूपों का उद्‌गम आलोचकगण इन्हीं संवाद सूक्तों से जोड़ते हैं। इनके अतिरिक्त सामान्य स्तुति–परक सूक्तों में भी भिन्न–भिन्न देवताओं के विषय में अनेक छोटे–छोटे मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद आख्यानों के संकेत मिलते हैं। जैसे प्रसिद्ध 'अपाला की कथा' का संकेत – एक रोगी, दुःखी युवती अपने पति से त्याग दी जाती है।

ऋग्वेद के उपरान्त कथा के तत्व हमें उपनिषदों में मिलते हैं। कठोपनिषद् में देवताओं की शक्ति–परीक्षा और नचिकेता की कथा, छान्दोग्योपनिषद में सत्यकाय, श्वेतकेतु तथा उद्दालक की कथाएँ वृहदारण्यकोपनिषद में गार्गी और याज्ञवल्क्य की कथा, तैत्तरीयोपनिषद में वैदर्भि, कौशल्या, सुकेशा आदि की कथाएँ और मुण्डकोपनिषद में रौनक तथा अंगिरा की कथाएँ हैं। 'इन कथाओं का रूप और उद्देश्य साधारण कहानी से भिन्न रहा है, क्योंकि ये कथाएँ अनेक रहस्यात्मक व गूढ़ विषयों को स्पष्ट करने की साधन मात्र है[2]।

---

1. हिन्दी कहानियों का शिल्प विधि का विकास : डॉ० लक्ष्मी नारायण लाल, पृ० – 5।
2. हिन्दी कहानी : सिद्धान्त और विवेचन : डॉ० श्रीमती गिरीश रस्तोगी – पृ० 14

रचना विधान, वर्णन कौशल और कथा–सूत्र–संचालन की दृष्टि से ये कथाएँ उच्चकोटि की हैं। साथ ही प्रसंगानुसार उनमें पर्याप्त गंभीर्य और आलौकिकता भी है।

उपनिषदों के उपरान्त कथा क्षेत्र में आख्यानक काव्यों और पौराणिक कथाओं का युग आता है। आख्यानकों में राम और कृष्ण की कथायें सर्वाधिक लोकप्रिय हुई। बाल्मीकि और व्यास इनके प्रमुख प्रणेता हुए। रामायण एवं महाभारत में धार्मिक एवं लौकिक और साहित्यिक तीनों प्रकार की अपेक्षाओं की सन्तुष्टि का सफल प्रयास हैं। महाभारत एक विशिष्ट महत्व इस तथ्य में निहित है कि इससे परवर्ती पुराणों की कथा की सामग्री राजवंश, अवतार, पूर्व, उत्सव आदि उपलब्ध हुई।

तदुपरान्त जातक कथाओं का समय आता है। जातक कथाओं में गौतम बुद्ध के पाँच सौ सैंतालीस जन्मों की कहानियाँ समाविष्ट है। जातक कथाओं के अतिरिक्त आचार्य बुद्धदत्त कृत अधिधम्मावतार, रूपारूप विभाग, विनय विनिश्चय, उत्तर विनिच्छय तथा बुद्धघोष महास्थविर विरचित विमुंद्दि भग्गो, समस्त पासादिका, सुमंगल विलासिनी पपंच सूदिनी, साख्य पत्रासिनी आदि और आचार्य धर्मपाल प्रजीत सेतुबन्ध थेरी गाथाएँ, उदान इतिबुत्तक आदि अन्य कथा ग्रन्थ है जिसका बौद्ध साहित्य में जातक तथा अन्य कथाओं का बहुत महत्व है। मध्य एशिया, अरब देशों, ईरान और यूरोप देशों की जातीय कथाओं पर इनका दूरगामी प्रभाव है। पहली दूसरी शताब्दी के लगभग पैशाची भाषा में गुणाठ्य द्वारा रचित, वृहत्कथा नामक ग्रन्थ, जो अब अनुपलब्ध हैं, कथा साहित्य की अमर कृति था। हर्ष चरित, काव्यादर्श, वृहतकथा मंजरी तथा कथा सरित्सागर आदि पुस्तकों में वृहत्कथा का संकेत मिलता है। कश्मीरी ब्राह्मण पं० सोमदेव (1063 और 1081 के बीच) द्वारा लिखित कथा सरित्सागर को वृहत्कथा का कश्मीरी संस्करण माना जाता है।

उद्यातन सूरि द्वारा 779 ई० के आस–पास लिखित कुबलयमाला नामक एक कथात्मक ग्रन्थ का उल्लेख मिलता है। इसके साथ ही संस्कृत के परवर्ती कथा–साहित्य में बाणभट्ट की कादम्बरी, सुबन्धु की वासवदत्ता और दण्डी के दशकुमार चरित की भी गणना की जाती है। इसके अतिरिक्त वृहत्कथा श्लोक, बैताल पंचविंशतिका, शुकसप्तति, सिंहासन द्वात्रिंशिका, पंचतंत्र हितोपदेश आदि अन्य संस्कृत कथा ग्रन्थ हैं, जो कथा–साहित्य अजस्त्र स्त्रोत है। वासवदत्ता दशकुमार चरित और कादम्बरी में काण्य तत्व अधिक है, फिर

भी इनमें पर्याप्त कथा तत्व विद्यतान है। कथा सरित्सागर, बैताल पंचविंशतिका, सिंहासन द्वात्रिंशिका और शुक सप्तति कथा–शिल्प की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं। इनमें कथाओं का संगुफन इस प्रकार हुआ है कि ये कौतुहल और उत्साह की अक्षय भण्डार बन गयी है। परवर्ती काल में इन्हीं से कथा सागर, बैताल पच्चीसी, सिंहासन बत्तीसी और किस्सा तोता मैना कहानी संग्रहों का प्रणयन हुआ।

ये कथाएँ मनोरंजन पूर्ण एवं शिक्षाप्रद दोनों हैं। इन्होंने कथा के प्रति लोकरूचि विकसित करने में अपूर्व योगदान प्रदान किया है। साथ ही बाद की प्राकृत और अपभ्रंश की कथाओं पर इनका दूरगामी प्रभाव पड़ा। इसके अतिरिक्ति हिन्दी भाषी प्रदेश में प्रचलित लोक कथाओं के मूलस्त्रोत भी कथा संग्रह ही हैं।

पंचतंत्र और हितोपदेश नीतिपरक कथा–संग्रह है। इनकी रचना क्रमशः तेरहवीं शताब्दी और चौदहवीं शताब्दी के लगभग हुआ है। महाराष्ट्रीय प्राकृत में कौतुहल द्वारा रचित लीलावती कथा का भी पर्याप्त कथात्मक महत्व है। अपभ्रंश में अनेक महत्वपूर्ण कथा ग्रन्थ उपलब्ध है। अधिकांश जैन प्रेम आख्यानक अपभ्रंश में है। पद्म रचित, 'भविष्यदत्त' कथा, नेमिनाथ रचित करकंड चरित, महापुराण, यशोधर चरित, कुमार पाल प्रतिबोध आदि अपभ्रन्श में रचित जैन ग्रन्थों में पर्याप्त कथा–तत्व विद्यमान हैं। फिर भी इनमें काव्यात्मकता अधिक है। इसके बावजूद इसका महत्व इस बात में है कि चारण कालीन गाथाओं और मध्यकालीन आख्यानक काव्य की कथनात्मकता पर उनका प्रभाव पड़ा।

कहानी भारतीय साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। आज की कहानी पहले की कहानियों से अलग रूप में दिखती है। कहानी का समाज समय के साथ बदलता रहा है। प्राचीन भारत की कहानियों को हम 'कथा सरित सागर', 'वृहत कथा मंजरी', 'जातक कथा', 'बेताल पच्चीसी' आदि के रूप में देख सकते हैं। इसी के साथ लोक–कथा की परम्परा में भी किस्से और कहानियों की सुदीर्घ परम्परा का भी निदर्शन होता है।

आदिम समाज आग की सभ्यता के साथ किस्सों में दिलचस्पी लेने लगा था। किस्सा गोई एक खास शिल्प होती है और उसके ताने–बाने में जो कथा वस्तु होते

हैं, वे बड़े ही प्रभावकारी होते हैं। किस्सा कहने वाला और सुनने वाला दोनों ही इसके अहम हिस्से होते हैं; यानि किस्सा--गोई लगभग संवाद कायम करने की स्थिति में होती है। इसमें खास बात कहन--शैली की है, जिसके द्वारा किस्सा कहा जाता है। निश्चित रूप में इसी कहन शैली के कारण 'कहना व सुनना' को माध्यम बनाकर कहानी का विकास हुआ। कहानी शिष्ट साहित्य की परम्परा से लम्बे अन्तराल तक लुप्त रही। साहित्य में काव्य ही प्रमुख रहा। यूँ भी गद्य रचना की प्रौढ़ परिपाटी भारतीय साहित्य, खासकर हिन्दी साहित्य में न के बराबर रही है।

लेकिन ये कहानियाँ जिन्दा थीं और इन्सान की जिन्दगी के साथ गहरा जुड़ाव रखती हैं जो लोक परम्परा में बदस्तूर चली आती थी। इन कहानियों का निरूपण कविताओं में हुआ है। सूफी काव्यधारा तो इन्हीं कहानियों के आधार पर एक मिथ तैयार करती हैं। वस्तुतः कहानी अन्तर्धारा के रूप में निरन्तर दिखती हैं।

विश्व की सभ्यतायें कहानियों के साथ संश्लिष्ट हैं। भारत में इस्लाम संस्कृति आने के बाद कहानी को अरब व फारस की कहानियों से तादात्म्य स्थापित करने का अवसर मिलता है, लेकिन इसके बावजूद कहानी लेखन स्वतंत्र होने लगता है। अंग्रेजी, फ्रान्सीसी, डच, पुर्तगाली संस्कृतियाँ अपने साथ साहित्य भी ले आई थीं। तब जाकर कहानी नये तेवर में स्वतंत्र अस्तित्व के लिए संघर्षशील दिखाई देने लगीं। 'रानी केतकी की कहानी' इस तरह से पहली कहानी के रूप में दिखती है।

बाद में 'चन्द्रकान्ता संन्तति'; 'भूतनाथ', 'काजल की कोठरी' आदि रचनायें साहित्य में मिलने लगती हैं। कहानियों के लिए अब तक ठोस जमीन तो बन गयी थी लेकिन उसका साहित्यगत वैशिष्ट्य नहीं तय हो पाया था। जब प्रेमचन्द कहानी लेखन के क्षेत्र में उतरते हैं तो कहानी की उसी ठोस जमीन पर प्रौढ़ रचना होने लगती है। प्रेमचन्द की कहानियाँ उसी किस्सा गोई कहन--शैली से सधी हुई है, जिससे कहानी न सिर्फ रोचक बनती है बल्कि जन पक्षधर दिखाई पड़ने लगती है।

प्रेमचन्द से लेकर प्रसाद, निराला, जैनेन्द्र, अज्ञेय, रांगेय राघव, फणीश्वरनाथ रेणु, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंबदा और साठोत्तरी पीढ़ी के काशी नाथ सिंह, ज्ञान रंजन, दूधनाथ सिंह, रविन्द्र

कालियाँ और समानान्तर कहानी आन्दोलन के महीप सिंह आदि इस पूरी कथा परम्परा के अलम्बरदार हैं जिन्होंने कहानी साहित्य को पूरे हिन्दी साहित्य में विशिष्ट गौरव दिया है। कहानी इसी गौरव से वंचित और निराधार थी। अब वह साहित्य में प्रमुख बिन्दु के रूप में आ गयी। आज कहा जाता सकता है कि साहित्य के नाभिकेन्द्र के तौर पर कहानी ही है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल के संदर्भ में अपने वर्तमान परिप्रेक्ष्य को गद्य काल के रूप में यूँ ही नहीं अभिहित किया था। यह उनकी इतिहास–दृष्टि का प्रमाण है कि यह बीती सदी गद्य को ही समर्पित रही है और यह सदी भी गद्य पर ही आधारित है। गद्य के विकास में सिर्फ और सिर्फ कहानी को देखा जाना चाहिए। समय–समाज के बदलते परिशिष्ट को रेखांकित करती हुई ये कहानियाँ सही मायने में साहित्य को अर्थ देती हैं।

कहानी रूढ़ि पर चलती है लेकिन रूढ़ नहीं होती हैं। इसमें निरन्तर बदलाव स्वतः होते हैं क्योंकि जब भी हम अपने बारे में कुछ कहने के लिए आगे आते हैं तो वही कुछ कहना पड़ता है। जैसा भी रहा है बीतते समय को ईमानदारी के साथ बताना और आने वाले समय की संभावना पर विचार करना कहानी का विशिष्ट धर्म है।

चूँकि समय और समाज ही कहानी धुरी है। यह समय जिसे हम नई शब्दावली में उत्तर आधुनिक कह रहे हैं, उस पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। यह उत्तर आधुनिकता सूचना क्रान्ति, भूमण्डलीकरण, बाजारवाद, उपभोक्तावाद संस्कृति, अपसंस्कृति, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अराजकता के दौर में है। इन्हीं परिदृश्यों में समाज को आज की कहानियों में देखना कहानी के उत्तर आधुनिक समय पर विमर्श के रूप में देखा जा सकता है। उदय प्रकाश, संजय सहाय, शिवमूर्ति, संजीव, विभांशु दिव्याल, अमरीक सिंह दीप, सारा राय, मैत्रेयी पुष्पा, अखिलेश, जया जादवानी आदि इस विमर्श पर आधारित कहानी लेखन के लिए जाने जाते हैं, वहीं पुरानी पीढ़ी से काशीनाथ सिंह, दूधनाथ और निर्मल वर्मा अब भी इस दौर पर दृष्टि केन्द्रित कर कहानी रचना के क्षेत्र में कार्यरत हैं। विशेष रूप से काशीनाथ सिंह साठोत्तर पीढ़ी के कहानीकार हैं। उन्हें कहानी के फार्म को बदलकर नये फार्म में लिखने के लिए जाना जाता है। कहानी हदों को तोड़कर चलती है। इसे जानने के लिए काशीनाथ सिंह के संस्मरण पर्याप्त हैं जो संस्मरण भी नहीं है और कहानी भी नहीं। उन्हें रिपोर्ताज भी नहीं कहा जा सकता। चाहे 'देख तमाशा लकड़ी का' हो या 'सन्तो

घर में झगरा भारी' आखिर काशीनाथ सिंह का लेखन किस विधा में हो रहा है, इसे जानना आवश्यक है। यही बात नई पीढ़ी के उदय प्रकाश की कहानियों पर लागू होती है, 'वारेन हेस्टिंग्ज का साँड़' और 'पीली छतरी वाली लड़की' कहानी के किस फ्रेम में फिट हो सकती है, इसे देखना होगा। यही कहानियाँ मुख्यतः आधार का काम करेंगी। हालांकि अन्य कथाकारों की यथावसर चर्चा सन्दर्भित रहेगी। कुल मिलाकर उत्तर आधुनिक चिंतन की छानबीन करते हुए विमर्श के सकारात्मक पक्ष पर विचार करते हुए इधर की कहानियों के सरोकार को जानना तथा हिन्दी के बड़े पाठक समुदाय पर इन कहानियों के प्रभाव का आकलन इस शोध–कार्य का उद्देश्य है।

संपूर्ण शोध प्रबन्ध अध्ययन की निश्चित सरणि में नियोजित है। शोधकार्य की भूमिका प्रथम अध्याय में लिखने के बाद द्वितीय अध्याय में "हिन्दी कहानी का इतिहास" लिखते हुए कथा साहित्य की स्वतंत्र परम्परा का पहली बार अनुशीलन यहाँ किया गया है। हिन्दी साहित्य के रासो काल से लेकर अब तक यानी समकालीन कहानी के परिदृश्य को इस शोध प्रबन्ध में विश्लेषित किया गया है और नयी श्रृंखला के तौर पर आज कहानी में उत्तर–आधुनिक प्रवृत्ति पर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया गया है।

तृतीय अध्याय में "उत्तर–आधुनिक चिन्तन" पर प्रकाश डालते हुए उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि पर विचार यहाँ किया गया है। इसी अध्याय में संरचनावाद, विखंडनवाद, डीकान्स्ट्रक्शन यानी अनुपस्थिति की तलाश और अन्त में उत्तर–आधुनिकतावाद पर विस्तार में शोधपूर्ण विमर्श प्रस्तुत किया गया है।

इसी प्रकार "उत्तर–आधुनिक संस्कृति" नामक चौथे अध्याय में सामाजिक विसंगतियों का विश्लेषण, बाजारीकरण और उपभोक्तावाद तथा भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में सूचना के बढ़ते दबाव एवं विज्ञापन की दुनिया का तथ्यात्मक विवंचन किया गया है। वस्तुतः आज की कहानी के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों और संत्रास से भरे मानव समाज की विडम्बनाओं को उसकी वस्तुगतता में देखने का प्रयास यहाँ हुआ है। जाहिर है कि आज की कहानी इस उत्तर–आधुनिक संस्कृति से बचकर नहीं रह सकती है। इसलिए अर्थशास्त्रीय प्रसंगों को भी उत्तर–आधुनिक संस्कृति की छवियों के लिहाज से नए जीवन सन्दर्भों में देखने का यत्न है क्योंकि आज की कहानी का यही धरना केन्द्र है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध के पाँचवें अध्याय में आज के कहानी लेखन पर उत्तर–आधुनिक अर्थच्छवियों का निदर्शन कराया गया है। दरअसल इस समय कहानी के फार्म और टेकनीक को लेकर मूल्यगत दबाव रहे हैं। साथ ही इसमें कुछ अवधारणायें ऐसी दृष्टिगत हो रही हैं जिसे देखकर यही कहा जा सकता है कि कहानी जैसी विधा का कायाकल्प हो रहा है। निश्चित रूप में कहानी के रूप में बदलाव पाठकीय सरोकार और सूचनाकारी प्रवृत्ति हमारे समय के कहानियों की नयी आंतरिक टेकनीक कही जा सकती है। इस अध्याय में शिल्प और कथ्य के अन्तर सम्बन्ध को नज़दीक से समझने की यहाँ कोशिश हुई है। कहानी आलोचना की दृष्टि से भी ये नये शोध के बिन्दु हैं जिन पर अभी भी काफी विचार किए जाने की जरूरत है।

कहानीकारों पर बिना चर्चा किए कई बार कहानी बेमजा हो जाती है। कहानीकार का व्यक्तित्व भले ही इन कहानियों से दूर रहता हो लेकिन उनकी लेखकीय प्रतिभा का विशेष अर्थ होता है। ऐसे कहानीकार जो अपने लेखकीय कौशल के चलते विध को ही बदलने की क्षमता रखते हैं। उन्हें जानना निहायत जरूरी है। संवेदना के स्वर अनुभूति की सघनता में जब किस्सागोई पर उतरते हैं तो उसका हर लहजा कहानी की 'टेकनीक' और कान्टेक्ट को प्रभावित करता है। इसलिए आज समय और समाज से गहरा जुड़ाव रखने वाले कहानीकार चाहे वे काशीनाथ सिंह हो या उदय प्रकाश अथवा मैत्रेयी पुष्पा या जमाजादवानी और मनोहर श्याम जोशी इन सभी लोगों के लेखन पर गम्भीरता से विचार करना पड़ता है क्योंकि ये ऐसे लेखक हैं जिनका अपना विस्तृत पाठक वर्ग है और इनकी अलग प्रभाव क्षमता भी। इसलिए इस शोध प्रबंध का छठवाँ अध्याय 'उत्तर–आधुनिक कहानीकार' उपशीर्षक के अन्तर्गत उपर्युक्त तथ्यों को केन्द्र में रखकर ही विवेचित हुआ है।

अन्त में सम्पूर्ण शोध–प्रबन्ध का आशय अपनी प्रस्तावना के अनुरूप उद्देश्य पर विचार करते हुए परिणति तक पहुँचना चाहता है। 'उत्तर आधुनिक कहानी' और उसका समय व समाज कथाकारों के लेखकीय वैशिष्ट्य में निष्कर्ष नामक अंतिम अध्याय में यहाँ समायोजित है।

यह शोध प्रबन्ध नवीनतम सूचना और अभिनव दर्शन पर आधारित है। आज कहानी लेखन का संसार इतना वृहद् है कि उसकी सम्पूर्णता में देख पाना कई बार कठिन

हो जाता है। अकेले कहानी विधा पर ही इतनी पत्रिकायें निकल रही हैं और लघु पत्रिका की तो कोई गणना ही नहीं है। इसलिए अधिसंख्य कहानियों को पढ़कर 'उत्तर–आधुनिक' अर्थच्छवि की तलाश स्वयं में दृष्कर है। लेकिन शोधार्थी के समक्ष ज्ञान के विस्तार की यह चुनौती उसके गुरू कवच के कारण नतमस्तक हो गयी। वास्तव में मेरे शोध निर्देशक और पूज्य गुरूदेव डॉ० हृदय नारायण राय शास्त्री (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, बरदह, पी० जी० कालेज, बरदह, आजमगढ़) एवं डॉ० संजय श्रीवास्तव जी का स्नेह सानिध्य उनका गम्भीर ज्ञान और पाण्डित्य ही इस शोध प्रबन्ध के स्थापत्य की आधारशिला है। शास्त्री जी एवं श्रीवास्तव जी का वैदुष्य ही रहा जिसने मुझे शोध करते हुए हर कठिनाई से उबारा यदि अपने गुरू की इस अहेतुकी कृपा के लिए कृतज्ञता ज्ञापन करूँ तो यह औपचारिकता होगी, साथ ही गुरू परम्परा के विरूद्ध वाचन भी माना जाएगा। इसलिए गुरू सामीप्य बनाए रखने के लिए ऐसी धृष्टता नहीं कर रहा हूँ। सिर्फ मैं ही नहीं बल्कि मेरे सभी अग्रज इन्हीं के शिष्य हैं। प्राचार्य जी का वाणी वैदग्ध्य और उनका करवदर सदृश ज्ञान इम सबको तमस से युक्त कर देता है जैसा कि कठोपनिषद् में कहा गया है कि –

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दृर्ग पथस्ततकवयो वदन्ति।

अर्थात् ज्ञानियों ने कहा है कि ज्ञान मार्ग पर चलना छुरी की तेज धार पर चलने के समान है इसलिए इसी श्लोक की प्रथम पंक्ति –

उन्तिष्ठत् जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

तात्पर्य कि उठो जागो और श्रेष्ठ लोगों से ज्ञान प्राप्त करो। मैने इसी रीति का अनुगमन करते हुए अपने प्राचार्य महोदय के समक्ष अपना निवेदन रखा और उन्होंने निरन्तर मेरा मार्ग दर्शन किया जिसका परिणाम यह शोध प्रबंध है।

पी० जी० कालेज, बरदह आजमगढ़ के हिन्दी विभाग के प्रवक्ता डॉ० सुरेश चन्द्र उपाध्याय एवं डॉ० पूनम श्रीवास्तव जैसे विद्वान शिक्षक मुझे जीवन में सुयोग से मिले जिनके कारण मैं तत्वबोध प्राप्त कर सका।

मुझे जिन्होंने पाल–पोस कर बड़ा किया और मुझे सदैव शिक्षा की ऊँचाई पर देखने का सपना देखते रहे हैं। वे मेरे पिता श्री माता प्रसाद भट्ट, माता श्रीमती फूलदेई भट्ट का स्नेह संबल और उत्साहवर्धन ही शोधकार्य की थाती है। पिता जी की तरफ से

निरन्तर शोध कार्य में प्रभावी सहयोग और सहूलियतों का चिन्तनपूर्ण प्रयास ही उच्च शिक्षा के इस सोपान पर मेरे मनोरथ सिद्ध हो सका।

जीवन में लौकिक व्यवहार को देखते हुए मेरे सभी बड़े भाइयों एवं भाभियों तथा मित्रों का मुझे जो सहयोग मिला उसके बिना तो शायद यह शोध प्रबन्ध लिखा ही न जा सका होता। मैं सर्वाधिक किसी को नमन करूँ तो अपने पूज्य गुरू डॉ० संजय श्रीवास्तव, चाचा श्री चन्द्रेज भट्ट, श्री रामउद्रेज भट्ट, चाची श्रीमती सुशीला भट्ट एवं श्रीमती शोभवन्ती भट्ट, बड़े भाई श्री देवी प्रसाद भट्ट एवं श्री बृजराज भट्ट तथा भाभी श्रीमती शान्ति भट्ट एवं श्रीमती शाीला भट्ट को इन लोगों ने मुझे तमाम समस्याओं से परे रखकर उच्च शिक्षा के प्रतिष्ठादायक सोपान पर कदम रखने का सुअवसर दिया।

निश्चित रूप से यह सभी कार्य मेरे पूरे परिवार के स्वस्थ परिवेश और तनावमुक्त वातावरण में ही सम्भव हो सकता है। इसलिए अपने परिवार के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। पी० जी० कालेज बरदह, आजमगढ़ के पुस्तकालय और कर्मचारियों का अपार स्नेह और सहयोग मेरे लिए सहायक रहा। इसलिए उन्हें भी साधुवाद। अंत में इस पूरे शोध प्रबन्ध को सुन्दर शैली में सहयोग देने वाले संगणक श्री संदीप मौर्य जी का भी मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

शोधार्थी

बबलू कुमार भट्ट

(बबलू कुमार भट्ट)